उपसंहार

भोजपुरी भाषा में भी अन्य भाषाओं की भांति शब्द भेद होते हैं, जो इस प्रकार है- संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रिया-विशेषण, संबंध-बोधक, समुच्चय-बोधक और विस्मयादि-बोधक। रूपांतरण के आधार पर शब्द के दो भेद होते हैं- विकारी और अविकारी। विकारी के अंतर्गत वे शब्द-वर्ग आते हैं, जिनके रूप लिंग, वचन और कारक आदि व्याकरणिक कोटियों के अनुसार परिवर्तित होते हैं लेकिन अविकारी के अंतर्गत वे शब्द-वर्ग आते हैं, जिनके शब्द-रूपों में लिंग, वचन और कारक के अनुसार कोई परिवर्तन नहीं होता है।

संज्ञा के तीन रूप पाए जाते हैं- (1) सामान्य या लघु रूप, (2) गुरु रूप और (3) अनावश्यक/व्यावहारिक रूप। जैसे- डोम, डोमवा, डोमवना/डोमउवा। अनावश्यक/व्यावहारिक रूप सभी शब्दों का नहीं बनाता है। भोजपुरी में वचन परिवर्तन में 'अन, अनि, अन्ह, अन्हि, न, न्ह, नि' प्रत्यय का प्रयोग होता है। वही बहुवचन बनाने के लिए 'वन, अवन, उवन, इयन, अइयन' इत्यादि प्रत्ययों का प्रयोग होता है। इकारांत, ईकारांत, उकारांत और ऊकारांत एकवचन शब्दों के अंत में 'इ' या 'ई' का 'इय' और 'उ' या 'ऊ' का 'उव' हो जाता है और 'अन' मिलकर 'ई' और 'ऊ' क्रमशः 'इयन' और 'उवन' हो जाता है। डाटाबेस में मूल संज्ञा के 350 शब्दों को लिया गया है। जिसमें मूल संज्ञा शब्द के अधिकतम सात रूप बनते हैं और न्यूनतम गिने-चुने ही रूप बनते हैं। इन शब्दों के अलग-अलग रूपों के नाम इस प्रकार हैं- मूल रूप, एकवचन + ही, एकबचन +भी, बहुवचन, बहुवचन + ही, बहुवचन +भी और गुरु रूप। जैसे- लइका, लइकवे, लइकवो, लइकवन, लइकवने, लइकवनों और लइकवा।

विशेषण शब्दों के भी तीन रूप मिलते हैं- (1) सामान्य या लघु रूप, (2) गुरु रूप और (3) अनावश्यक या व्यावहारिक रूप। जैसे- बड़, बड़का और बड़कवा। भोजपुरी में तुलनात्मक अभिप्राय की अभिव्यक्ति के लिए करण परसर्ग 'से', अधिकरण परसर्ग 'में' तथा 'बढ़िके, जियादा, कम' जैसे विशेषण शब्द-रूप व्यवहृत होते हैं। डाटाबेस में मूल विशेषण के 80 शब्दों को लिया गया है। जिसमें मूल विशेषण शब्द के अधिकतम दस और न्यूनतम गिने-चुने ही रूप बनते हैं। इन शब्दों के अलग-अलग रूपों के नाम इस प्रकार हैं- मूल रूप, वाला 1, वाला 2, वाला + ही, वाला + भी, वाली, वाली + ही, वाली + भी, पुल्लिंग बहुवचन, स्त्रीलिंग बहुवचन और वा/या रूप। जैसे- मोट, मोटका, मोटहन, मोटके, मोटको,

मोटकी, मोटकिए, मोटकियो, मोटकन और मोटकिन; लेकिन वा/या रूप में 'होनहार' से 'होनहरवा' आदि शब्दरूप बनते हैं।

अतः भोजपुरी भाषा की संरचना को अगर हिंदी भाषा से तुलना की जाए तो पाया जाता है कि इस भाषा (भोजपुरी) की संरचना हिंदी भाषा की संरचना से बहुत भिन्न है। रूपसाधक की तरह व्युत्पादक पर भी काम किया जा सकता है और इसीप्रकार भाषा प्रौद्योगिकी के अंतर्गत भोजपुरी भाषा की संरचना के प्रत्येक स्तर पर शोध किया जा सकता है।

प्रस्तुत लघु-शोध कार्य की उपयोगिता भी इस प्रकार है-

1.भोजपुरी भाषा में संज्ञा एवं विशेषणों के रूपों की व्यवस्था को समझने में यह लघु-शोध प्रबंध सहायक सिद्ध होगा।

2. भोजपुरी कार्पस का विश्लेषण करने में उपयोग किया जा सकता है।

3. इसका उपयोग टैगर, मार्फ एनालाइजर और जेनरेटर जैसे टूल्स में प्रयोग किया जाएगा।

संदर्भ ग्रंथ-सूची

1. ओझा, त्रिभुवन. (1987). *प्रमुख बिहारी बोलियों का तुलनात्मक अध्ययन.* वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन.
2. कुमार, अरविंद. (2009). *भोजपुरी-हिंदी-इंग्लिश लोक शब्दकोश.* आगरा: केंद्रीय हिंदी संस्थान.
3. गुरु, कामता प्रसाद. (2012). *हिंदी व्याकरण*. नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान.
4. जैन, प्रदीप कुमार. (1996). *मानक हिंदी व्याकरण*. नई दिल्ली: तुषार पब्लिकेशन्स.
5. तरुण, हरिबंश. (2011). *मानक हिंदी व्याकरण और रचना*. नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान.
6. तिवारी, शकुंतला. (2009). *भोजपुरी की रूपग्रामिक संरचना.* कानपुर: विकास संस्थान.
7. तिवारी, उदयनारायण. (2011). *भोजपुरी भाषा और साहित्य.* पटना: राष्ट्रभाषा परिषद्.
8. त्रिपाठी, आचार्य रामदेव. (1987). *भोजपुरी व्याकरण.* पटना: भोजपुरी अकादमी प्रकाशन.
9. त्रिपाठी, रामदेव. (1987). *भोजपुरी व्याकरण.* कानपुर: विकास संस्थान.
10. त्रिपाठी, राम छबीला. (2014). *आधुनिक सामान्य हिंदी व्याकरण तथा रचना.* इलाहाबाद: किताब महल.
11. दीमशित्स, जाल्मन. (1983). *हिंदी व्याकरण.* मास्को: रादुगा प्रकाशन.
12. दुबे, अजीत. (2014). *तलाश भोजपुरी भाषायी अस्मिता की.* नई दिल्ली: इंडिका इंफोमीडिया
13. पाण्डेय, अनिल कुमार. (2010). *हिंदी संरचना के विविध पक्ष.* दरियागंज नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान.
14. प्रसाद, धनजी. (2012). *सी. शार्प प्रोग्रामिंग एवं हिंदी के भाषिक टूल्स.* नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान.
15. प्रसाद, वासुदेवनन्दन. (2010). *आधुनिक हिंदी व्याकरण और रचना.* पटना: भारती भवन पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स.
16. वाजपेयी, किशोरीदास. (1950). *हिंदी शब्दानुशासन.* वाराणसी: नागरीप्रचारिणी सभा.
17. विराट, विष्णु चतुर्वेदी. (1999). *राज भाषा हिंदी व्याकरण.* मथुरा: अमर प्रकाशन.
18. सिंह, जयकांत. (2013). *मानक भोजपुरी भाषा, व्याकरण आ रचना.* मुजफ्फरपुर (बिहार): राजर्षि प्रकाशन.
19. सिंह, शुकदेव. (2009). *भोजपुरी और हिंदी.* वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन.